



मुजफ्फरपुर-विहार। माननीय मुख्यमंत्री नितिश कुमार को ईश्वरीय सौगात देने के पश्चात् ब.कु. वंदना, ब.कु. मधु तथा अन्य।



मुम्बई-गोर्ई। 'एचीविंग प्रोफेशनल एक्सिलेंस' सेमिनार में वी.आइ.पी.जी को सम्बोधित करते हुए ब.कु. पारुल। साथ हैं ब.कु. डॉ. गिरीश पटेल।



ओगली पंडोरा-शिमला। चरित्र निर्माण प्रदर्शनी के अवलोकन के पश्चात् ए.एस.आई. अशोक कुमार को आध्यात्मिक साहित्य भेंट करते हुए ब.कु. शकुंतला।



पानीपत-हरियाणा। गेल इंडिया लि. कम्पनी में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' विषय पर बताने के पश्चात् ब.कु. भारत भूषण, पंकज पटेल, जी.एम., गेल, ब.कु. रामालक्ष्मी तथा ऑफिसर्स, गेल कम्पनी।



सोनीपत-हरियाणा। विश्व दौड़ के शुभ अवसर पर मोतीलाल नेहरू स्पोर्ट्स स्कूल में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कैप्टन वी.के. वर्मा, रिटायर्ड आई.एन., प्रधानाचार्य, स्पोर्ट्स विद्यालय। साथ हैं पी.के. मेहरचन्द, ब.कु. उषा, ब.कु. नीलम, ब.कु. गौरव तथा ब.कु. प्रकाश।



राजकोट-गुज.। 'माइ राजकोट एडिक्शन फ्रॉम राजकोट' के अंतर्गत समर वेकेशन के दौरान बच्चों में जागृति लाते हुए ब.कु. अंजु, ब.कु. किंजल तथा ब.कु. भारती।

जहां प्यार वहां परिवार

विश्व परिवार दिवस

क्या आपने कभी एक साथ चार-पांच गेंद उछालने वाले बाजीगर या उसकी तस्वीर को गौर से देखा है? गेंद उछालते हुए उसके हाथ तो यंत्रवत चलते हैं, लेकिन निगाहें ऊपर, एक जगह पर टिकी होती हैं। इस जगह से निगाह हटी और गेंदों का तारतम्य गड़बड़ा जाता है।

हमारे पारिवारिक रिश्ते भी ऐसे ही होते हैं। रिश्तों को समझने और उन्हें लगातार गतिशील रखने के लिए सिर्फ एक चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना पड़ता है- भावनात्मक जुड़ाव। इस जुड़ाव के लिए सचेत रूप से प्रयास करना अब और भी ज़रूरी है, क्योंकि हमारे परिवारों का स्वरूप वैसे नहीं रहा, जैसे दो दशक पहले तक हुआ करता था। शहरीकरण के साथ-साथ रोजगार की

परिवार भले ही न बंटें हों, लेकिन परिजन दूर हो रहे हैं। पजबूरियों और दूरियों के इस दौर में भी भावनाओं का धागा पूरे परिवार को जोड़ सकता है। परिवार अब भी संयुक्त रह सकते हैं, एक नई सोच के साथ...

सम्भावनाओं में असीमित विस्तार और निजी मत्वाकांक्षा ने परिवार की भारतीय अवधारणा को ऊपरी तौर पर बदल दिया है। पश्चिम से भिन्न, हमारे लिए इसमें दादा-दादी, मां-बाप, ताऊ-ताई, चाचा-चाची आदि भी शामिल रहे हैं। यानी, खूब लम्बा-चौड़ा और भरा-पूरा एक ऐसा कुनबा, जिसमें सबके दुःख-सुख साझा हैं, हर तीज-त्योहार सब साथ मिलकर मनाते हैं, मुसीबतों का सामना मिलकर होता है, बैठक-खाने से हंसी-ठहाके की गूंज उठती रहती है...। अधिकांश लोगों के मन में परिवार की ये मधुर स्मृतियाँ अब भी जीवित हैं।

लेकिन खासतौर पर शहरों में ऐसे परिवार सिर्फ यादों में ही रह गए हैं। इसके

पीछे व्यावहारिक वजहें भी हैं। खेती और कारोबार के बजाय अब नौकरी का बोलबाला है। अजीबिका की खातिर पारिवारिक सदस्यों को दूसरे शहरों में भी बसना पड़ता है। फिर, बड़े शहरों में संयुक्त परिवार की ज़रूरतों के हिसाब से बड़ा घर मिलना महंगा ही नहीं, मुश्किल भी होता है। कई बार समय, दूरी आदि को लेकर भी दिक्कतें आती हैं। इन सबके चलते, भावनाओं को परे रखकर निर्णय लेने पड़ते हैं। बावजूद इसके कि हमारे लिए परिवार का अर्थ संयुक्त परिवार ही है। आखिरकार, 'घुटने पेट की तरफ ही मुड़ते हैं'। हमें मुश्किल या ज़रूरत के मौके पर अपना परिवार ही याद आता है और वही वास्तविक सहारा बनता भी है। इसीलिए नए युग की नई



आवश्यकताओं को न भूलते हुए भी परिवार को बनाए व बचाए रखने पर जोर दिया जा रहा है।

मेल-मिलाप- यदि आप एक ही शहर में दूर-दूर रहते हैं, तो यह ज़रूरी है कि पखवाड़े या महीने में एक बार परिवार के सभी सदस्य इकट्ठा हों। साथ खाना खाएं, अपनी बातें बताएं। यदि अलग-अलग शहरों में रहते हैं, तब भी दो-चार महीनों में ऐसा ज़रूर करें।

खास मौके- परिवार में त्योहार, जन्मदिन या खुशी के अन्य मौकों पर शिरकत ज़रूरी है। कोशिश करें कि ऐसे अवसर हाथ से न जाने पाएं। इनमें आप एक साथ सभी

परिवार को जोड़ा जा सकता है।

परिवार अब भी संयुक्त रह सकते हैं, एक नई सोच के साथ...

रिश्तेदारों से मिल सकते हैं।

अपनाई तकनीक- आधुनिक तकनीकें खिड़की की तरह हैं, जो परिजनों ही नहीं, उनके पड़ोसियों, अपने दोस्तों, पुराने पड़ोसियों के जीवन में झांकने का मौका देती हैं। टेलीफोन और इंटरनेट के ज़रिए उनसे लगातार जुड़े रहें। किसी भी रिश्ते को सौंचना पड़ता है। यह सौंचना लगातार सम्पर्क में बने रहना ही है।

अहंकार छोड़ें- छोटी-छोटी बातों पर बातचीत बंद हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन जब भीतिक दूरियाँ हों, तो अबोल

दूटने में अड़चनें आती हैं। ऐसे समय में अकड़ें नहीं। यदि आप परिवार को सचमुच महत्व देते हैं, तो छोटी-मोटी बातों को अनदेखा करें और आगे बढ़कर मेल-मिलाप की पहल करें।

सच्चा साथ- खून, खून ही होता है। लाठी मारने से पानी नहीं बंटता। ये कहावतें परिवार के संदर्भ में भी सच हैं। खुशियों में हिस्सा बांटने तो कोई भी आ जाएगा, लेकिन दुःख और संकट के समय अपने ही साथ होते हैं। इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि अपनों को जब ज़रूरत हो, उस समय आप उनके साथ रहें। इससे भरोसा और प्रेम पक्का होता है।

मनोभाव बदल गया...

अनुभव



पहले मुझमें चिड़चिड़ापन, गुस्सा आ जाना, ये आम बात थी, साथ ही साथ सहभागी कर्मचारियों से भी झगड़ा हो जाना स्वाभाविक था। लेकिन ईश्वरीय ज्ञान में आने से मेरे मनोभाव में बदलाव आया। सभी अब मेरे परिवार का हिस्सा बन गये हैं, व्यवहार में बदलाव तथा व्यापार में भी बढ़ोत्तरी हुई। यह कहना है अलवर से माउण्ट आवू के राजयोग तपस्या शिविर में हिस्सा लेने आये ब.कु. केवल कृष्ण का। उनके अनुभव के कुछ अंश उन्हीं के शब्दों में -

कुछ वर्षों पहले मेरे परिवार में शराब पीने के कारण मेरे पिता और मेरे भाई की एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई। उसके बाद एक दिन मैं टी.वी. देख रहा था जिसमें मैंने शिवानी बहन का प्रोग्राम 'अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज़' देखा तो मुझे बहुत अच्छा लगा। उसके बाद मैं रोज़ सात बजे टी.वी. के सामने बैठ जाता था और वो प्रोग्राम देखा करता था। उसमें एक दिन शिवानी बहन ने बताया कि मैं तो यहाँ ज्ञान सुनाती हूँ लेकिन अगर ज्ञानामृत पीना है तो आपको ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेंद्र पर जाना होगा। मेरी भी बहुत इच्छा होती थी कि सेंटर पर जाऊँ पर मुझे कोई माध्यम नहीं मिल रहा था। फिर एक दिन एक ब्रह्माकुमार भाई मेरे पास आए और मुझे कहा कि मैं तुम्हें सेंटर

पर लेकर चलींगा। वे मुझे वहाँ लेकर गए, वहाँ जाकर मैंने सात दिन का कोर्स किया। उन सात दिनों में ही मेरी पूरी लाइफ़ चेज हो गई। मैं भी अपने पिता और भाई की तरह ही ड्रिंक करता था। लेकिन कोर्स के बाद मेरी ड्रिंक बूट गई, अशुद्ध भोजन बूट गया और मुझमें बहुत ही ज्यादा परिवर्तन आ गया। मेरी दुगुण को भी मैं कोर्स करवाना चाहता था लेकिन कुछ बीमारियों के कारण वो सेंटर नहीं जा सकती थी तो सेंटर की दीदी ने कहा कि आप उनका कोर्स घर पर ही करवा लो। फिर उनको भी कोर्स करवाया गया और पाँच-छः महीने से वे भी ज्ञान में हैं। मुझे अभी पूरा एक साल भी इस ज्ञान में नहीं हुआ है लेकिन परमात्मा ने मुझे इतनी प्राप्तियाँ करा दी हैं

जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मैं पहले अपने एप्लॉयमेंट पर बहुत क्रोध करता था, कोई भी बात हो तो उनको बहुत डाँटता था, तो वे काम छोड़कर चले जाते थे। लेकिन ज्ञान में आने के बाद अब मैं उनको डाँटता नहीं हूँ, सिर्फ वायब्रेशन भेजता हूँ बाबा से लेकर और उनमें ऐसा चेंज आ जाता है जैसे कि वे मेरे परिवार के ही हैं। वे मेरे साथ मिलकर काम करते हैं और मुझे अब कुछ देखना भी नहीं पड़ता, अपने आप सारे काम हो रहे हैं। मेरा बिज़नेस अब बहुत ही अच्छा चल रहा है। मुझे बाबा से इतनी प्राप्तियाँ हुई हैं कि मैं बाबा का हमेशा ही शुक्रगुजार हूँ। मेरा अनुभव रहा कि पाण्डव भवन का प्रांगण हर इन्सान को रिचार्ज करने का केन्द्र है।